''पदार्थों में लिप्त नहीं होने वाला ही परम को प्राप्त कर सकता है''

- युवाचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं 15 अक्टूबर, 2009।

''हर व्यक्ति का लक्ष्य परम को प्राप्त करने का होता है किंतु उस लक्ष्य को मोह से दूर होकर ही प्राप्त किया जा सकता है। मोह में जीने वाले व्यक्ति के लिए अनासक्ति का मार्ग कठिन हो सकता है। कर्म करते हुए, गृहस्थ में रहने हुए अनासक्ति साधना कठिन होती है किंतु जो समूह में रहते हुए शांति से रहता है तो खास साधना की बात होती है''

उक्त विचार युवाचार्यश्री महाश्रमण ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में 11 अक्टूर से 18 अक्टूबर तक चलने वाले आठ दिवसीय प्रेक्षाध्यान के शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

युवाचार्यश्री ने फरमाया कि प्रेक्षाध्यान शिविर में रहने वाले लोग समूह में रहते हैं किंतु यह अल्प काल का समूह है, किंतु जो अपने जीवन में लंबे समय तक समूह में रहते हुए गुस्सा नहीं करता, शांति से रहता है मन के प्रतिकूल शब्द सुनने को मिल जाए तो भी शांत रहता है तो वह व्यक्ति दीर्घकालीन शांति को प्राप्त कर सकता है।

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि आसक्ति मनुष्य की चेतना को खराब करती है साधक यह सोचे कि यदि शरीर में आसक्ति का कीटाणु है तो उसे अपने भीतरी आंख से ध्यान के द्वारा आसक्ति को कीटाणु को नश्ट करना है।

उन्होंने यह भी फरमाया कि हमारे साधु-साध्वियों के समूह में कई अलग-अलग प्रांतों, विभिन्न ठाणे वाले साधु-साध्वियां हैं उनमें शांति है। साधु दीक्षित होते हैं तो वे जैन शासन में आ जाते हैं फिर सब एक परिवार की तरह साथ में रहते हैं क्योंकि उनमें राग-द्वेष, मोह की भावना नहीं होती है। राग-द्वेष, स्वार्थ में न फंसना अनासक्ति की साधना है जहां कुछ बनने की भावना होती है वहां आसक्ति पैदा हो जाती है फिर वह थोड़े लाभ के लिए बड़े लाभ से वंचित हो जाता है।

उन्होंने उत्तराध्ययन के सूत्र का प्रतिपादित करते हुए फरमाया कि संसार में अनेक पदार्थ हैं उनका दृष्टा भले ही बनो अर्थात उसे देखें किंतु उसमें लिप्त नहीं होना चाहिए और जो व्यक्ति अलिप्ता की ओर प्रस्थान करता है तो वह परम का साक्षात्कार कर परम को प्राप्त कर सकता है।